



Criteria– 7

7.3 Portray the performance of the Institution in one area distinctive to its priority and thrust


PRINCIPAL
Sri Sathya Sai College
For Women, Bhopal (M.P.)

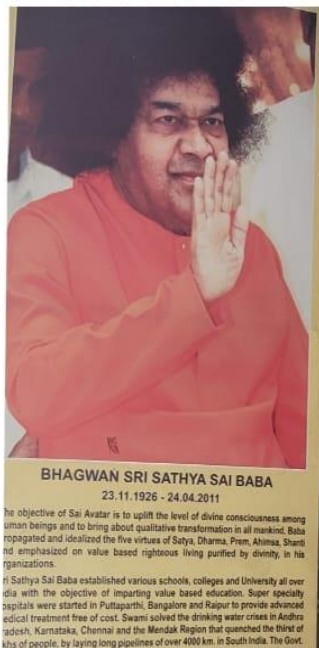


SRI SATHYA SAI COLLEGE FOR WOMEN, BHOPAL

Kasturba Hospital Road, Habibganj, Bhopal -462024

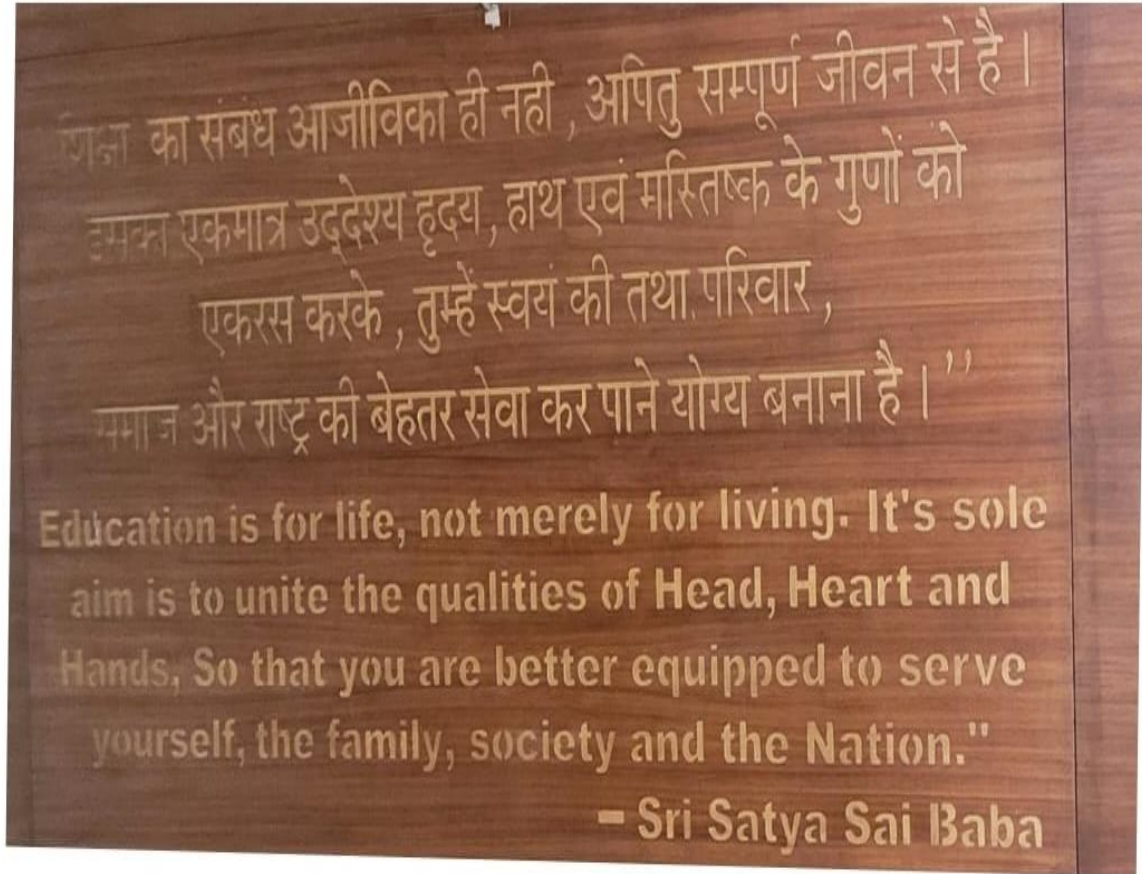


RECEPTION OF THE COLLEGE





Sathya Sai Baba's Quote



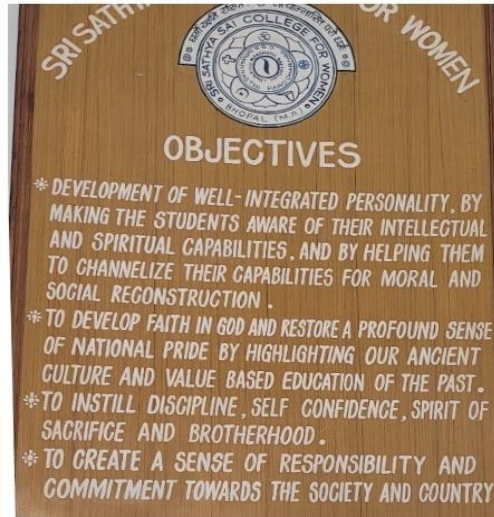


MISSION STATEMENT

"In this College the medium is Discipline; the first, second and third languages are Love, Service and Sadhana".

VISION

"We envision the emancipation and empowerment of women through value based education and enabling them to participate actively in the work of nation building and social reconstruction".



BHAJAN HALL





Morning Assembly

<https://youtu.be/dCbdXcyb4ko?si=fHfpyZeLqC7XMnmT>

Sarv Dharm Prayer

**Om Tatsat Sri Narayana Tu
Purushothama Guru Tu
Siddha Buddha Tu Skanda Vinayaka
Savita Pavaka Tu
Brahma Madhya Tu Yahova Shakthi Tu
Ishu Pitha Prabhu Tu
Rudra Vishnu Tu Ramakrishna Tu
Rahim Tao Tu
Vasudeva Tu Viswa roopa Tu
Chidananda Hari Tu
Advitiya Tu Akala Nirbhaya
Atma linga Siva Tu**

Morning Assembly

MONDAY TUESDAY WEDNESDAY

मध्यप्रदेश गान

सुख का दाता सबका साथी शुभ का ये संदेश है,
माँ की गाँव, पिता का आश्रय मेरा मध्यप्रदेश है।
मेरा मध्यप्रदेश है।

- विद्याचल सा भाल नर्मदा का जल इसके पाम है
यहाँ ज्ञान, विज्ञान, कला का लिखा गया इतिहास है
उर्वर भूमि, सघन वन रत्न संपदा जहाँ अशेष है,
स्वर्-सौरभ -सुपमा से मंडित मेरा मध्यप्रदेश है
मेरा मध्यप्रदेश है।
- चम्बल की कल-कल से गुंजित कथा दान बलिदान की
खजुराहो में कथा कला की चित्रकूट में राम की
भीमबैठका आदि कला का पत्थर पर अभिषेक है
अमृत कुण्ड अमरकंटक में, ऐसा मध्यप्रदेश है
ऐसा मध्यप्रदेश है।
- क्षिप्र में अमृत घट छलका, मिला कृष्ण को ज्ञान यहाँ,
महाकाल को तिलक लगाने, मिला हमें वरदान यहाँ,
कविता न्याय, वीरता गायन सब कुछ यहाँ विशेष है,
हृदय देश का यह, मैं इसका मेरा मध्यप्रदेश है
मेरा मध्यप्रदेश है।

राष्ट्र-गीत
वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
सख्यं श्यामलां मातरम्
शुभ्रं ज्योत्सनाम् पुलकितं यामिनीम्
फुल्लं कुसुमितं द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुरं भाषिणीम् .
सुखदां वरदां मातरम् ॥

सज्ज कोटि कण्ठ कलकले निनाद कराले
द्विसप्त कोटि भुजैर्धृतं खरकरवाले
के बोले मा तुमी अबले
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीम् मातरम् ॥

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदय तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदयं तुमि मा भक्ति,
तोमारि प्रतिमा गङ्गि मन्दिरं-मन्दिरं ॥

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम् ॥

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणिं मातरम् ॥

१. गणपति प्रार्थना

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविः कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्योष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शुष्यवृत्तिभिस्सीद् सार्दनम् ॥
प्रणो देवी सरस्वती वाजोभिर्वाजिनीवती । धीनामदिव्यवतु ।
गणेशाय नमः । सरस्वत्यै नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । हरिः ओम् ॥ २

२. गायत्री मन्त्रः

पुरुषस्य विद्मः सहस्राक्षस्य महोदेवस्य धीमहि । तन्नो र्यद्रः प्रचोदयात् ॥ १ ॥
तत्सुखाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो र्यद्रः प्रचोदयात् ॥ २ ॥
तत्सुखाय विद्महे ब्रह्मण्युवाये धीमहि । तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥
तत्सुखाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् ॥ ४ ॥
तत्सुखाय विद्महे महासेनाय धीमहि । तन्नोऽश्विभ्यः प्रचोदयात् ॥ ५ ॥
तत्सुखाय विद्महे सुवर्णपद्माय धीमहि । तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥ ६ ॥
वेदात्मनाये विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥ ७ ॥
नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि । तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥
वज्रनरवाय विद्महे तीक्ष्णदृग्गुणाय धीमहि । तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् ॥ ९ ॥
भास्कराय विद्महे महद्युतिक्राय धीमहि । तन्नो ज्योतिः प्रचोदयात् ॥ १० ॥
वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि । तन्नो अग्निः प्रचोदयात् ॥ ११ ॥
काल्यायनाय विद्महे कन्यकुमारि धीमहि । तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥ १२ ॥
श्री साईराम विद्महे सारवतय धीमहि । तन्नः स्वः प्रचोदयात् ॥ १३ ॥
सह ना-वतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहे ।
तेजस्विना-वधीत-मस्तु मा विद्विषावहे ।
ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॥ १४ ॥

Ved Path Recitation by Students



Guru Purnima Celebration

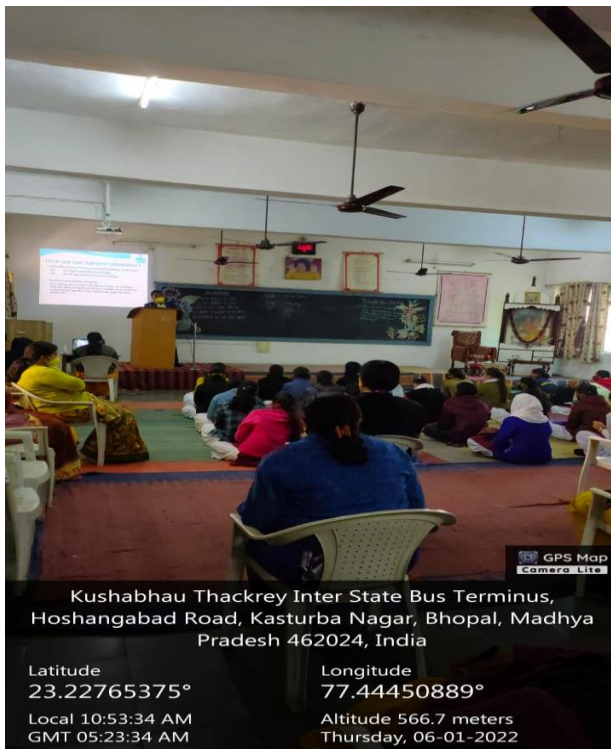
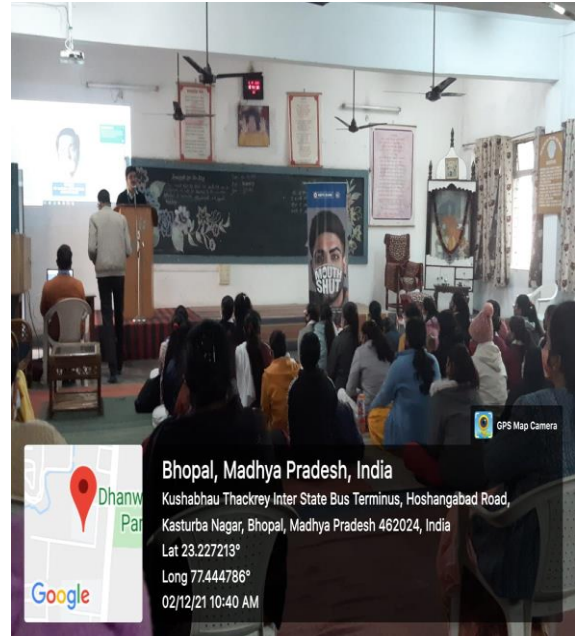




**Laksharchan, Poornima
 Puja & Baba's B'day
 Celebration**



Thursday Lecture



Yoga



Martial Art



Puttaparthi Trip



Spiritual Camp on “Indian Culture & Sprituality”





National Webinar on "Indian Culture and Spirituality"

On 19-02-2022 a National online webinar "Indian culture and Spirituality" based on Human Values was organized. The Link for the same is <https://www.youtube.com/watch?v=kgExaS8nQv0>



Activities of Philanthropic Society

At Sri Sathya Sai College for Women, Bhopal





DISTRIBUTION OF WOOLENS TO THE CLASS IV EMPLOYEES

Distribution of blankets to the class IV employees of the college

At Adopted Village Tola Chota Kheda





Distribution of Ann Kalash at village Badakho



Visit to Old Age Home



Philanthropic activity at slum

